PEASANT MOVEMENTS(PART-1)

FOR P.G.SEM-3,CC-13,UNIT-3

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

- ब्रिटिश सरकार की स्थापना के कुछ दशकों के भीतर ही भारतीय कृषक को ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों एवं नई भू राजस्व व्यवस्था का दंश झेलना पड़ा। किसानों को एक साथ कंपनी व जमींदार दोनों के अत्याचारों का सामना करना पड़ा था। शोषित एवं पीडित किसानों द्वारा विरोध मुख्तया लगान वृद्धि, बेदखली, साहूकारों की सूदखोरी और अंग्रेज बागान मालिकों के उत्पीड़न एंव शोषण के विरुद्ध चलाया गया था।

पृष्ठभूमि

- यह कृषक विद्रोह एवं आंदोलन मुख्यतः जमींदार विरोधी ,साहूकार विरोधी और विदेशी सत्ता विरोधी थे। कृषक आंदोलन वर्ग चेतना और वर्ग आंदोलनों का स्वरूप ग्रहण नहीं कर सके क्योंकि इन आंदोलनों का उदय स्थानीय समस्याओं को लेकर हुआ था।ये स्थानीय रहे इनका कोई नियमित संगठन था और ना ही कोई नेतृत्व।
- अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से किसान आंदोलन को दो चरणों में बाँटकर देखा जा सकता है- एक उन्नीसवीं सदी के और दूसरे बीसवीं सदी के।

किसान विद्रोह के कारण-ब्रिटिश आर्थिक नीति

- ब्रिटिश भू राजस्व प्रणाली में लगान की दरें अत्यधिक होने से किसान त्रस्त थे।जमींदारी प्रथा में बिचौलिए वर्ग की संस्थागत श्रेणी का विकास हुआ जो जमींदारों के लिए लगान वसूलते थे ।जमींदार एवं उत्पादन कर्ता के बीच 50 तक बिचौलिये हुआ करते थे। रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत निर्धारित अत्यधिक लगान राशि को जुटाने में किसान ,साहूकार से कर्ज लेने को विवश हुए परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे किसान महाजनों के चंगुल में फंसने लगे और उनकी जमीनें ,फसलें व पशु उनके हाथ से

ब्रिटिश आर्थिक नीति

निकलकर जमींदारों, व्यापारियों, महाजनों आदि के हाथों में सिमटने लगी ।किसान बेगार करने को मजबूर हो गए ।इस तरह ब्रिटिश भू राजस्व व्यवस्था ने किसानों को बेचैन कर दिया और वे आंदोलन के लिए तत्पर हो गए।

- विऔधोगिकरण से इन उद्योगों से जुड़े लोग भी खेतों पेशा अपना लिये जिससे कृषि भूमि पर दबाव बढ़ा।

बारंबार पड़नेवाला अकाल

- उपनिवेशवाद द्वारा उत्पन्न संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भयंकर अकाल पड़ा तथा भूख से लाखों कृषक तथा अन्य कमजोर वर्ग लोगों की मृत्यु हो गई। इस काल में भारत के भिन्न-भिन्न भागों में 24 छोटे-बड़े अकाल पड़े जिनमें लगभग दो करोड़ 85 लाख व्यक्ति मर गए ।**1876-78,1896-97 तथा1899-1900ई**. के बीच भीषण अकालों एवं ब्रिटिश सरकार के अपर्याप्त राहत कार्यों से किसानों में असंतोष भर गया।

साम्यवादी क्रांति एंव आर्थिक मंदी

- रूसी क्रांति के बाद भारतीय राष्ट्र वादियों का कृषि संबंधित समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ और किसानों की दयनीय स्थिति और शोषण के प्रति उनकी गहरी चिंता स्वभाविक थी।
- **आर्थिक मंदी-** प्रथम विश्व युद्ध के बाद विशेष रूप से विश्वव्यापी आर्थिक संकट के दौरान किसानों का असंतोष अधिक तीब्र हुआ। इस संकट ने कृषि अर्थव्यवस्था पर करारा प्रहार किया।

किसान संगठनों का उदय

परिणामतः किसानों ने लगान बढ़ाने, जबरन जमीन छिनने आदि के विरुद्ध आंदोलन किया।

- **किसान संगठनों का उदय-** किसान संगठन ने किसान आंदोलनों के एक निश्चित आकार प्रदान किया। इन संगठनों के नेतृत्व में किसानों के ऊपर हो रहे अत्याचार ,शोषण के विरुद्ध अभियान किया गया गया। कर्ज माफी लगान में कमी, किसानों के स्वैच्छिक फसल उगाने का अधिकार जैसी बातों को उठाकर इन संगठनों ने किसान आंदोलन को प्रोत्साहित किया।

प्रमुख किसान आंदोलन 19वीं सदी

- **रंगपुर का विद्रोह (1783 ई.)-** बंगाल से सटे ब्रह्मपुत्र घाटी के रंगपुर क्षेत्र में सरकार ने लगान राशि में अत्यधिक वृद्धि कर दी। फलतः किसानों ने ***धीरज नारायण*** के नेतृत्व में जमींदार- ठेकेदार ***देवी सिंह*** के विरुद्ध विद्रोह कर दिया किंतु ब्रिटिश ने बल प्रयोग कर इस विद्रोह का दमन कर दिया।

फराजी आंदोलन(1837-38)

- फरायजी आंदोलन उग्र सुधारवादी विचारधारा से प्रभावित था। वे ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्यों को समान मानते थे। इनके अनुसार जमीन पर ईश्वर का अधिकार है इसलिए किसी को भी लगान वसूलने का अधिकार नहीं है।
- इस आंदोलन में धर्म के अतिरिक्त राजनीतिक पहलू भी थे। फराजी प्रचलित व्यवस्था में परिवर्तन चाहते थे क्योंकि कंपनी शासन ने मुसलमानों के सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक ,धार्मिक जीवन पर गहरा आघात किया।

फराजी आंदोलन

- फराजी किसानों की दयनीय स्थिति से क्षुब्ध थे। वे कंपनी व जमींदार दोनों के अत्याचारों के विरोधी थे। किसानों के वर्ग में हिंदू और मुसलमानों सभी के प्रति इनकी दृष्टि सहयोगपूर्ण रही।
- ***हाजी शरीयत उल्लाह*** और उनके पुत्र ***दादू मियां*** के नेतृत्व में किसानों का विद्रोह हुआ।उन्होंने किसानों को कंपनी और जमींदारों के विरूद्ध लामबन्द किया ।फलतः सामंत और सरकार दोनों ने ही इनके विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई की।

संथाल विद्रोह(1855-56)

- संथाल एक शांतिप्रिय तथा विनम्र लोग थे जो आरंभ में मानभूम,बड़ाभूम,हजारीबाग, मिदनापुर ,बांकुड़ा तथा बीरभूम प्रदेश में रहते थे। जो भूमि वे शताब्दियों से जोत रहे थे 1793 के स्थाई भूमि कर व्यवस्था ने स्थिति में बदलाव ला दिया। नई जमींदारी व्यवस्था में जमींदारों की अत्यधिक मांग के कारण इन शांतिप्रिय लोगों को अपनी पैतृक भूमि छोड़कर राजमहल की पहाड़ियों के आसपास बसना पड़ा। यह क्षेत्र **दामिन ए कोह** कहलाया।

संथाल विद्रोह

- इनके विद्रोह का मूल कारण महाजनों के बढ़ते शोषण, उधार की समस्या, पुलिसिया भ्रष्टाचार तथा जमीन से बेदखल कर बाहरी जमींदारों को दिया जाना था।
- प्रारंभ में संथाल महाजन, व्यापारियों के खिलाफ थे न कि अंग्रेजों के किंतु जब अंग्रेज अधिकारियों ने इन व्यापारियों की मदद की तब आदिवासी अंग्रेजों के विरुद्ध हो गए ।

संथाल विद्रोह

- दो भाइयों ***सिद्धू*** और ***कान्हू*** के नेतृत्व में **1855 ई.** में विद्रोह शुरू हुआ।
- इस आंदोलन में मसीहा वादी दृष्टिकोण मिलता है। सिद्धू ने कहा कि- **ठाकुर जी(भगवान) ने निर्देश दिया है कि आजादी के लिए अब हथियार उठा लो।** इस तरह संथाल विद्रोह आर्थिक कारणों से आरंभ हुआ किंतु शीघ्र ही उनका उद्देश्य विदेशी शासन का अंत करना हो गया क्योंकि अंग्रेज अधिकारी उनकी शिकायतों पर ध्यान नहीं देते और शोषकों को आश्रय देते थे।
- उन्होंने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी, ***मेजर बर्रो*** के अधीन एक अंग्रेजी

संथाल विद्रोह

सेना को अपमानजनक मात खानी पड़ी। फरवरी 1856 ई. में संथालों के नेता को बंदी बना लिया गया तथा विद्रोह कठोरता पूर्वक दबा दिया गया ।

- सरकार को इनके लिये **संथाल परगना एक्ट** बनाना पड़ा तथा उनके रोष को शांत करना पड़ा।

नील विद्रोह(1859-60)

- पूर्वी भारत में यूरोपीय नील बागान मालिक किसानों को अपनी जमीन के कुछ हिस्से पर अलाभकर नील की फसल उगाने के लिए मजबूर करते थे तथा इसके लिए वे स्वेच्छाचारी एवं कठोर तरीकों का उपयोग करते थे। किसानों दवारा विरोध करने पर उनका अपहरण करके उन्हें गैरकानूनी ढंग से बंदी बनाया जाता था, महिलाओं और बच्चों पर हमला किया जाता था, उनके पशुओं को उठा लिया जाता था तथा फसलें लूट ली एंव जलाकर नष्ट कर दी जाती थी।

नील विद्रोह

- बागान मालिकों के अत्याचार से तंग आकर **अप्रैल 1860** ई. में नील का उत्पादन न करने का आंदोलन शुरू किया। यह नादिया जिले में गोविंदपुर ग्राम के दंगों से शुरू हुआ जो शीघ्र ही दूसरे क्षेत्रों में भी फैल गई । यह भारतीय इतिहास की **प्रथम कृषक हड़ताल** थी।
- पुलिस के सिपाहियों और पुलिस चौकियों की तरह नील कारखानों पर हमले शुरू हो हो गए। किसानों ने अपने विरुद्ध सभी अदालती मामलों को निपटाने के लिए धन की व्यवस्था करके स्वंय बागान मालिकों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई शुरू की ।

नील विद्रोह

- आंदोलनकारियों ने बगान मालिकों के घरेलू नौकरों को अपने मालिकों की नौकरी छोड़ देने के लिए बाध्य किया।
- नील किसानों को बंगाल के बुद्धिजीवियों, प्रेस एंव धर्म प्रचारकों का भी व्यापक समर्थन प्राप्त था ।इस संदर्भ में **हिंदू पेट्रियट** के संपादक ***हरिश्चंद्र मुखर्जी*** की विशिष्ट भूमिका रही। बागान मालिकों के उत्पीड़न का खुलासा ***दीनबंधु मित्र*** के नाटक **नील दर्पण** में भी किया गया है।

नील विद्रोह

- सरकार को **1860 ई.** में एक जांच समिति गठित करनी पड़ी जो **नील आयोग** के नाम से जाना जाता है। सरकार ने एक अधिसूचना जारी की जिसमें कहा गया कि किसानों को नील की खेती करने के लिए बाध्य नहीं किया जाए तथा यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी प्रकार के विवादों का निपटारा कानूनी तरीके से हो। कालांतर में यही निलहे यू .पी. तथा बिहार चले आए।

. To be continued.....